नमस्कार!

आज से मैं आप के साथ मेरे ईशन्य भारत के प्रवास के अनुभवों को बांटना चाहती हूं! यह एक अल्पसा प्रयास है ! आशा हैं कि यह प्रयास आपको अच्छा लगेगा!

वैसे तो कार चलाना मुझें बहोत अच्छा लगता है, इसके पहले भी मैने मेरे पुणे से दिल्ली तक का प्रवास वर्णन विस्तार से किया था! अभी मैं आपके साथ मेरे ईशान्य भारत के प्रवास वर्णन को बांटना चाहती हूं! इस प्रवास में मेरे साथ उष्मा पन्डित और भक्ती पटवर्धन साठे, जो क्रमश: दिल्ली और कानपुर से हैं, थी! पूरा प्रवास 19 दिनोंतक चला! इस प्रवास में हमने दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, असाम, नागा भूमी, मणिपुर, म्यानमार, मिझोरम, मेघालय, असाम, भुतान होकर वापसी में फ़िरसे पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश से दिल्ली प्रवास किया ! पिछले साल के 23 मार्च को हमने दिल्लि से प्रवास आरंभ किया था! इस 23 मार्च को एक साल पूरा हो रहा है! मेरा प्रयास यही रहेगा कि मैं सारा प्रवास वर्णन हिन्दी में लिखूं ! अगर कोई गलति होती है तो बडे मनसे मांफ़ कर देना! कलसे 19 दिनों तक प्रत्येक दिन एक साल पहले के उस दिन के अनुभवोंको याद करके लिखने क प्रयास करुंगी !

ईशान्य भारत के बारे में कुछ बातें....

कौन कहता है पृथ्वी पर स्वर्ग नही है? कभी तो समय निकालो और चलो ईशान्य भारत कि ओर... आपको स्वर्ग वही मिलेगा ! कुछ स्वार्थ भरे राजकीय कारणों से 80 की शुरुआत से 2006 तक वहां अशान्ती जरुर थी ! लेकीन वह अशान्ती पैदा की हुई थी ! अगर कोई द्रष्टा नेता हमें स्वातन्त्रोत्तर काल में मिला होता तो आज पुरा ईशान्य भारत कुछ अलग होता... इतना ही नही आज वह भारत के काफ़ी बडे एरिया के लिए राइस बौल के तरह काम आता! काश ऐसा होता ! इतनी सोना उगलने वाली ज़मीन ...सन्जीवनी उगाने वाली ज़मीन... उपेक्षित रही ! किसको दोष दे? हम ही कारण हैं ! हमने ही ऐसे ऐसे निकम्मे लोगोंको चुन के दिया था...और कुछ काल के लिए नहीं तो लगभग 70 सालों तक...जो हम ने किया वही ईशान्य भारत के लोगों ने भी किया और उन्हो ने भुगता भी! और जब जागृत हुए तो हर तरफ़ शान्ति आ गई! अभी अगर समस्या है तो हमारी सोच समस्या है ! आज भी हम उनको चिनि, नेपाली, चिंकी, या परदेशी बुलाते है ! यह सब कब बदलेगा...कैसे बदलेगा? एक ही उत्तर है... समझना... जब हम उनको समझेंगे... उनकी संस्क्रृति को समझेंगे... उनके खान पान को, उनके रहन सहन को समझेंगे.. अपना मानेंगे तो एक सौहर्द पूर्ण वातावरण कि निर्मिती होगी ! और यह सब करते समय मां क ह्रदय आपके साथ रखते है तो सोने पे सुहागा!

इन्ही बातों को समझने के लिए हम ने ईशान्य भारत कि यात्रा का प्रयोजन किया ! खुद की आंखो से बातें देखी, समझी... और नाम दिया “मदर्स ऑन व्हील” - “MOTHERS ON WHEEL”...

तो चलो कल से शुरु करते है ईशान्य भारत कि यात्रा !